जीविते यस्य जीपन्ति विप्राः मित्राणि बान्धवाः

सफलं जीवितम् तस्य आत्मर्थे को न जीवति ।।7।।

शब्दार्थ :– जीविते :– जीने पर ; यस्य :– जिस के ;जीवन्ति :– जीते है ; विप्रा :–ब्राह्मण ; बान्धवा :– बन्धु बान्धव ;तस्य :– उसका ;

आत्मर्थे :– अपने लिए ;को :– कौन ; न :– नहीं ;जीवति :– जीता ;

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियॉ हमारी पाटय पुस्तक संस्कृत पुस्तक –8 में से पाठ सुभाषितानि में से ली गईं है। इस में कवि ने बताया है कि जीवन को अपने बन्धु बान्धवो के लिए जीना चाहिए, केवल अपने लिए नहीं ।

सरलार्थ :– कवि कहता है कि उसका ही जीना सफल है जो अपने बन्धु बान्धवों एवम् विद्वानों के लिए जीता है।अपने लिए इस दुनिया में कौन नहीं जीता।

पयः पानम् भुजंगानां केवलं विषवर्धनम्।

उपदेशौ हि मूर्खाणां प्रकोपाय न शान्तये ।।8।।

शब्दार्थ :–पयः :–दूध ;पानम् :– पीलाना ;भुजंगानाम् :– सॉपों को ;विषवर्धनम् :– जहर को बढाना ;हि :– से ; प्रकोपाय :–गुस्सा ;

प्रसंगः– यह लाइनें सस्कृत पुस्तक –8 में से ली गईं है। यह सुभाषितानि पाठ मेंसे ली गईं हैं। इस में कवि ने बताया है किमूर्खो को उपदेश देना केवल उनके क्रोध को बढाना है।

सरलार्थ :– सॉपों को दूध पिलाना केवल उनके विष को बढाना है क्योकि केवल उपदेश देने मात्र से मूर्खों के गुस्से को शान्त नहीं किया जा सकता ।भाव लातों के भूत बातों से नही मानते।

मक्षिका व्रणमिच्छन्ति,धनमिच्छन्ति पार्थिवाः।

नीचाःकलहमिच्छन्ति, शान्तिमिच्छन्ति सज्जनाः।।9।।

शब्दार्थ :–मक्षिका :– मक्खी ; व्रणम :– धाव ; इच्छन्ति :– चाहती है ;धनम् :– धन ; पार्थिवा :– राजा लोग ; नीचा :–छोटे लोग ; कलहम्:– झगडा ;सज्जना :– अच्छे लोग ।

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियॉ संस्कृत पुस्तक आठ में से सुभाषितानि पाठ में से ली गई है। इस में कवि ने लोगों की प्रवृति के बारे में बताया है।

सरलार्थः–कवि कहता है कि मक्खी धाव चाहती है। राजा लोग धन चाहते है।छोटे लोग झगड़ा चाहते हैं।अच्छे लोग हमेशा शान्ति चाहतें है।

खलः सर्षप– मात्राणि परछिद्राणि पश्यति ।

आत्मनो बिल्वः मात्राणि पश्यन्नापि न पश्यति ।।10।।

शब्दार्थ :– खल :– दुष्ट ; सर्षप :– सरसों के दाने के; मात्राणिः– बराबर ;पर :– दूसरे के ; छिद्राणि :– दोष को ;पश्यति :– देखता है ;

आत्मनो :–अपने ; चिल्व :– बडे से ;पश्यन्न अपि :–देखते हुए भी ; न :–नहीं ।

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियॉ संस्कृत पुस्तक आठ में से सुभाषितानि पाठ में से ली गईं है। इनमें कविने दुष्ट के बारे में बताया है कि वह दूसरों के बारे में कैसे सोचता है।

सरलार्थः–दुष्ट सरसों वै दाने के बराबर भी अर्थात बहुत कम दोष होमे पर भी दूसरे के दोष को बहुत बड़ा मानता है। और अपने में बिल्व फल के समान बहुत बडे बडे दोष होने पर भी उन्हें देखते हुए भी नहीं देखता है।